One Day Seminar on

Integration of AYUSH Medicines and Ethnopharmacology: A Strategy towards Evidence-based Medicines

4th October 2022 at NIPER-Mohali, Convention Centre, 10.00 AM onwards

The Department of Natural Products, NIPER, Sector-67 Mohali is organizing One Day National Seminar, 'Integration of AYUSH Medicines and Ethnopharmacology: A Strategy towards Evidence-based Medicines' on 4th October 2022 at the Convention Centre of the institute.

In recent times traditional systems of medicines are again gaining popularity worldwide due to large number of healthcare products derived from natural products are being introduced in the market. Several traditional medicine systems are used since ages and being practiced based on knowledge transferred from generation to generations. There has been emphasis on holistic approaches that are being practiced by the healers of TM systems viz. AYUSH systems in India. There is a huge demand of natural medicines/herbal drug products across the country as more and more scientific evaluations employing modern technology being carried out in the country.

Prof. Dulal Panda on the occasion expressed that this is a timely seminar on a very important topic on AYUSH medicines and Ethnopharmacology, keeping in view ever increasing demand for traditional medicines/herbal drugs across the country and globally as well. He mentioned that there is greater awareness among common people across the globe regarding health and wellness by using natural medicines. He congratulated the Department of Natural Products for organizing the seminar and extended full support for organizing the seminar.

Prof. Sanjay Jachak, Convenor of the national seminar emphasized the need of more scientific evaluations of herbal drug ingredients used commonly in various Ayurvedic, Unani and Siddha systems of medicines. He further expressed importance of globalizing local traditional knowledge with the approach of integrating TM medicines with Ethnopharmacology. He stated that the seminar will be attended by 125 delegates from various Pharmaceutical institutes, colleges across Punjab, Haryana, Himachal Pradesh, Delhi NCR and Rajastan. During scientific sessions lectures/presentations will be delivered by 9 invited expert speakers in the field from Academia and Herbal/Nutraceutical industry. There will be around 40 scientific posters on the theme of the conference will be presented by the young budding scientists.

The Seminar is sponsored by Zeon Life Sciences, Paonta Sahib, Himachal Pradesh; Chloriphyll Scientific Ltd., Chandigarh; and Ashiward Industries Ltd., Chandigarh.

एक दिवसीय संगोष्ठी

आयुष दवाओं और एथनोफार्माकोलॉजी का एकीकरण: साक्ष्य आधारित दवाओं की दिशा में एक रणनीति

आज नाईपर, सेक्टर -67 मोहाली के प्राकृतिक उत्पाद विभाग ने एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, 'आयुष दवाओं और एथनोफार्माकोलॉजी का एकीकरण: साक्ष्य-आधारित दवाओं की ओर एक रणनीति' का आयोजन किया ।

हाल के दिनों में दवाओं की पारंपरिक प्रणाली फिर से दुनिया भर में लोकप्रियता हासिल कर रही है क्योंकि बड़ी संख्या में प्राकृतिक उत्पादों से प्राप्त स्वास्थ्य उत्पादों को बाजार में पेश किया जा रहा है। कई पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों का उपयोग सदियों से किया जाता रहा है और पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित ज्ञान के आधार पर अभ्यास किया जा रहा है। भारत में आयुष प्रणाली के तहत टीएम सिस्टम के चिकित्सकों द्वारा अभ्यास किए जा रहे समग्र दृष्टिकोण पर जोर दिया गया है। देश भर में प्राकृतिक दवाओं/हर्बल औषधि उत्पादों की भारी मांग है क्योंकि देश में आधुनिक तकनीक का अधिक से अधिक वैज्ञानिक मूल्यांकन किया जा रहा है।

इस अवसर पर प्रो. दुलाल पांडा ने कहा कि यह देश भर में और विश्व स्तर पर भी पारंपरिक दवाओं / हर्बल दवाओं की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए आयुष दवाओं और एथनोफार्माकोलॉजी पर एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर एक संगोष्ठी है। उन्होंने उल्लेख किया कि प्राकृतिक दवाओं का उपयोग करके स्वास्थ्य और कल्याण के बारे में दुनिया भर में आम लोगों में अधिक जागरूकता है। उन्होंने संगोष्ठी आयोजित करने के लिए प्राकृतिक उत्पाद विभाग को बधाई दी और संगोष्ठी के आयोजन के लिए पूर्ण समर्थन दिया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक प्रो. संजय जाचक ने विभिन्न आयुर्वेदिक, यूनानी और सिद्ध औषधि प्रणालियों में आमतौर पर उपयोग की जाने वाली हर्बल औषधि सामग्री के अधिक वैज्ञानिक मूल्यांकन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने एथनोफार्माकोलॉजी के साथ टीएम दवाओं को एकीकृत करने के दृष्टिकोण के साथ स्थानीय पारंपरिक ज्ञान के वैश्वीकरण के महत्व को भी व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि सेमिनार में पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली एनसीआर और राजस्थान के विभिन्न फार्मास्युटिकल संस्थानों, कॉलेजों के 125 प्रतिनिधि भाग लेंगे। वैज्ञानिक सत्र के दौरान अकादमिक और हर्बल/न्यूट्रास्युटिकल उद्योग के क्षेत्र में 9 आमंत्रित विशेषज्ञ वक्ताओं द्वारा व्याख्यान/प्रस्तुतिकरण दिया जाएगा। युवा वैज्ञानिकों द्वारा सम्मेलन की थीम पर लगभग 40 वैज्ञानिक पोस्टर प्रस्तुत किए जाएंगे।

संगोष्ठी ज़ीओन लाइफ साइंसेज, पांवटा साहिब, हिमाचल प्रदेश; क्लोरीफिल साइंटिफिक लिमिटेड, चंडीगढ़; और आशीर्वाद इंडस्ट्रीज लिमिटेड, चंडीगढ़ द्वारा प्रायोजित है।